Artistic Narration Dec. 2014, Vol. VI http://anubooks.com/product/artistic-narration
(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

5

संगीत एवं शास्त्रीय संगीत एक अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश चौहान*

'भारतीय संगीत' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है– 'भारत का संगीत'। जब हम 'भारतीय संगीत' इस शब्द का प्रयोग करते हैं तो उससे यह तात्पर्य होता है कि हम पूरे देश के संगीत की बात कर रहे हैं। भारत में प्रचलित हर प्रकार के संगीत को जैसे कि शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत आदि सभी को हम भारतीय संगीत की संज्ञा दे सकते हैं अर्थात शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत, चित्रापट संगीत, रवीन्द्र संगीत, नाट्य संगीत पोप संगीत, रीमिक्स संगीत।

भारतीय संगीत के सभी विभिन्न प्रकारों में शास्त्रीय संगीत एक मुख्य प्रकार है। शास्त्रीय संगीत के बारे में बात करने से पूर्व संगीत की विभिन्न परिभाषाओं एवं उसकी उत्पत्ति सम्बन्धी उल्लेख करना उचित होगा।

संगीत मानव सभ्यता के उदय के समय से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। आज संगीत को ललित कला के रूप में उच्च स्थान प्राप्त है। एक ओर जहां संगीत की आत्म संतुष्टि, आध्यात्मिक उन्नति व साधना हेतु सहज माध्यम के रूप में अपनाया जाता रहा है वहीं लौकिक रंजन भी इसकी विशेषता रही है। प्राचीनवैदिक काल से ही इसका व्यवहार इन दोनों रूपों में होता आया है। आज के संदर्भ में यह कला मनोरंजन के अधिक निकट जान पड़ती है।

आज भारत में व्याप्त विभिन्न प्रकार के संगीत में शास्त्रीय संगीत का अपना ही विशिष्ट स्थान है। 'शास्त्रीय संगीत में अभिप्राय उस संगीत से लिया हैं जिसे समझने के लिए शास्त्र को समझना अनिवार्य है। शास्त्र का अर्थ शासन करने वाला या मार्ग दिखाने वाला है, लेकिन शास्त्रीय शब्द से अर्थ उस शास्त्र से है, जिसे पढ़कर, समझ कर, उस पर अमल किया जाए।' शास्त्रीय संगीत का एक नियमित शास्त्र होता है तथा उसी शास्त्रानुसार उसका गायन व वादन होता है।

शास्त्रीय से अर्थ वेदविहित, शास्त्रानुमोदित, शास्त्राबद्व, परम्परानुसार, वैज्ञानिक आदि हैं एवं संगीत से अर्थ गायन या मधुर गायन विशेषतः उस गयान से है जो नृत्य तथा वाद्ययंत्रों से साथ गाया जाता है। बृहत हिन्दी पर्यावाची शब्द कोशानुसार शास्त्रीय का अर्थ शास्त्रोक्त या शास्त्रानुकूल बताया गया है और संगीत से अर्थ गीत, गाना, गेय या कीर्तन आदि से है।

संगीत में गायन, वादन एवं निर्तन ये 3 भेद कहे गए हैं। ये तभी शास्त्रीय माने जाते हैं, जब हम इनको नियमों में बांध्कर प्रयोग करते हैं। संगीत मूलतः प्रयोगात्मक कला होते हुए भी शास्त्रीय इसलिए कही गई है क्योंकि यह निश्चित सिद्धांतों पर आधरित है। यह सिद्धांत ही शास्त्र का निर्माण करते हैं। संगीत से पूर्व शास्त्रीय शब्द लगा देने से एक बात स्पष्ट होती है कि शास्त्रीय संगीत ऐसा संगीत है जो शास्त्र की दृष्टि से पूर्णतः निर्दोष भी हो और आंतरिक लोकरंजन की दृष्टि से पर्याप्त सक्षम हो।

**ऐसोसियेट प्रो0., संगीत गायन राजकीय स्नात्कोतर महाविद्यालय सोलन, हि.प्र.*

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

'संगीत रत्नाकर शब्दों में–

यद्वा लक्ष्यप्रधनानि शास्त्राण्येतानि मन्वते ।

तस्माल्लक्ष्यविरूद्धं यत्तच्छास्त्रां नदेमन्यषा ।।

अर्थात कला चाहे अभिजात अर्थात क्लासिकल हो अथवा तद्विपरीत, दोनों के अपने नियम होते हैं, जो कला के मूलभूत स्वरूप की सुरक्षा में सहायक होते हैं।

संगीत का प्रथम शास्त्रीय रूप हमें वैदिक सामगान के रूप में प्राप्त होता है। वैदिक ऋषियों ने जिन मंत्राो का दर्शन किया उनका उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन स्वरों में पाठ तो किया ही किन्तु साथ ही साथ इन ऋचाओं का क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार्य, इन 7 स्वरों की सहायता से गान भी किया। वैदिक साहित्य में साम के साथ गान्धर्व संगीत का भी उल्लेख मिलता है। धार्मिक अनुष्ठानों में जिस संगीत का प्रयोग हुआ, वह 'सामगान' तथा लौकिक समारोहों में जिस संगीत का व्यवहार हुआ, वह 'गांधर्व' कहलाया। 'साम' वैदिक महर्षियों का संगीत था और 'गांधर्व' संगीत व्यवसायी गंधर्वो द्वारा गाया जाने वाला संगीत था। कालान्तर में साम संगीत धीरे–धीरे लुप्त होने लगा और गान्धर्व संगीत जो कि एक समय लोकसंगीत था, शास्त्रीय संगीत के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने लगा। हालांकि गांधर्व संगीत साम संगीत के सिद्धांत पर ही विकसित हुआ था।

तत्पश्चात भरत आचार्य ने जिस संगीत का उल्लेख अपने 'नाटय–शास्त्र' में किया है, वह गान्धर्व संगीत ही है। भरत ने स्वर–ताल और पद से युक्त संगीत को गान्धर्व संगीत कहा है। गांधर्व के अंतर्गत 'जाति–गायन' होता था, जिसका विकास लोकसंगीत से ही माना गया है। लोकधुनों को परिष्कृत एंव परिमार्जित कर उन्हें शास्त्रीयता प्रदान कर प्रमुख 18 जातियों का विकास हुआ तथा उनका मुख्य लक्ष्य देव पारितोष था। प्राचीन काल में गान्धर्व, शास्त्रीय संगीत के रूप में तथा गान, लोक संगीत के रूप में विकसित हुआ। कालान्तर में यही गान शास्त्रीय नियमों में बद्ध होकर शास्त्रीय संगीत कहलाया जिसके 'मार्गी' तथा 'देशी' दो रूपों का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। 'मार्ग' तथा 'देशी' दोनों धराओं का आधार लोक–संगीत ही था। मार्ग संगीत, शास्त्रीय संगीत के नियमों से बद्ध रहा, दूसरा लोकसंगीत के नियमों से नियंत्रित रहा। 'मार्ग' तथा 'देशी' दोनों परस्पर सापेक्ष संज्ञाएं हैं। प्रत्येक कला जनजीवन से सम्बद्ध होने के कारण उसका देशीत्व निर्विवाद है। कालक्रम से जब उसका व्याकरण बन जाता है, वही कला 'मार्ग' कहलाती है। मतंग मुनि के अनुसार–

अबलाबलगोपालैः क्षितिपालैनिजेच्छया ।

गीयतेयानुरागेण स्वदेशे देशिरूच्यते ।।24।।

अर्थात महिलाओं, बालकों, ग्वालों तथा राजा महाराजाओं के द्वारा अपनी इच्छा से अपने–अपने देश अथवा स्थानों पर अनुराग अथवा आनन्दपूर्वक जो गायी जाती है, इसे देशी अथवा देशी कहा जाता है।

निबद्धश्चानिबद्धश्च मार्गो यं द्विविधे मतः

आलापादिनबद्धो चः सच मार्गः प्रकीर्तितः ।।25।।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

अर्थात् आलाप आदि (गमक, मूर्च्छना, राग) से निबद्व (गान) को मार्ग (संगीत)कहा जाता है जो निबद्ध(नियमादि बंधनों से मर्यादित) तथा अनिबद्ध (जिसमें आलापादि स्वेच्छया गया जाता हो) रूप से दो प्रकार का है।

परवर्ती समय में यही देशी संगीत शास्त्रीय नियमों के अनुसार बद्व हो गया और राग के रूप में प्रचलित हो गया। आज जिस संगीत का शास्त्रीय संगीत की राग–रागिनियाँ, उससे सम्बन्धित वाद्य तथा नृत्य सभी देशी संगीत की देन हैं। इनका मूल रूप लोकसंगीत में खोजा जा सकता है। ध्रुवपद, ख्याल, तराना, टप्पा, आदि जिनकी आज शस्त्रीय संगीत में गणना होती है, वो मूलतः लोकसंगीत से प्राप्त एवं उसका परिष्कृत रूप ही है।

शास्त्रीय संगीत जैसा कि उपरोक्त विवरण के आधर पर पूर्णतः स्पष्ट ही है कि ऐसा संगीत जिसका अपना एक शास्त्र हो या जो शास्त्रधारित हो। शास्त्रीय संगीत, भारतीय संगीत की एक विशिष्ट गायन विद्या या शैली है, जिसमें संगीत के मुख्य तत्वों स्वर तथा लय का विकास राग तथा ताल के रूप में हुआ। या ये कह सकते हैं कि शास्त्रीय संगीत राग पर आधारित संगीत है। प्रत्येक राग का अपना एक शास्त्र, नियम, चलन, स्वरूप एवं निर्वाह की एक विशिष्ट प्रणाली है, जिसे संगीत के शास्त्रा या सैद्धान्तिक पक्ष के नाम से जाना जाता है। यानि किस राग को किस प्रकार से, कब और कैसे गाया या बजाया जाए, इसके लिए एक निश्चित रीति का विधन विद्वानों द्वारा किया गया है। जो क्रियात्मक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी होता हुआ आज हमारे समक्ष शास्त्रीय संगीत के रूप में मौजूद है।

आजकल आमतौर पर शास्त्रीय संगीत के लिए अंग्रेज़ी रूपान्तर 'Classical Music' शब्द का प्रयोग किया जाता है और व्यवहार में लाया जाता है। जो पाश्चात्य संगीत पर आधरित है। यहाँ इस संदर्भ में एक बात का स्पष्टीकरण करना आवश्यक होगा कि हमारे 'भारतीय शास्त्रीय संगीत' इन शब्दों के अतंर्गत गायन, वादन व नृत्य इन तीनों विधाओं का समावेश विद्वानों ने माना है। जब कि पाश्चात्य देशों में Classical Music के अंतर्गत गायन एंव वादन ही समाविष्ट होते हैं । नृत्य को अलग विभजित करते हुए वहाँ 'Classical Music and Dance' इस प्रकार से सम्बोधित किया जाता है। अतः भारतीय शास्त्रीय संगीत हेतु Classical Music के स्थान पर यदि 'भारतीय राग संगीत' कहा जाए तो ज्यादा न्यायसंगत होगा।

शब्दकोषों में 'Classic' इस शब्द की जो व्याख्या मिलती है, उसके अनुसार Classic का अर्थ है– 'उत्कृष्ट', 'आदर्श', 'श्रेष्ट', 'प्रथम श्रेणी का', 'अत्युत्तम'आदि। Classic से ही Classical बना है। जिसका शब्दिक अर्थ शब्दकोषों में इस प्रकार मिलता है– 'प्रतिष्ठित', 'उच्च कोटि के साहित्य के' आदि। इस आधर पर यदि हम गौर करें, तो यह साफ समझा जा सकता है कि आमतौर पर 'शास्त्रीय संगीत' के स्थान पर प्रयोग किया जाने वाला शब्द Classic संगीत या Classical संगीत भी पूर्णतः उचित प्रतीत नहीं होता। क्योंकि Classic संगीत या Classical संगीत का शाब्दिक अर्थ देखा जाए तो वह उत्कृष्ट संगीत, श्रेष्ठ संगीत, प्रतिष्ठित संगीत या उच्चकोटि के साहित्य का संगीत आदि बनता है। जो कि 'शास्त्रीय–संगीत' का पर्याय नहीं हो सकता। संगीत का कोई भी प्रकार उत्कृष्ट, प्रतिष्ठित या उच्च कोटि के साहित्य से युक्त हो सकता है। लेकिन 'शास्त्रीय–संगीत' की एक विशेष विध है

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

जो उपरोक्त विशेषताओं के साथ–साथ राग पर आधरित, नियमबद्ध तथा शास्त्रानुमोदित होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि 'Classical Music' इस शब्द का प्रयोग 'शास्त्रीय संगीत' के लिए करना सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है तथा 'Classical Sangeet' तथा कुछ हद तक ठीक होने के बावजूद 'शास्त्रीय संगीत' को पूर्णतः स्पष्ट करने में सक्षम नहीं है। अतः 'शास्त्रीय संगीत' को कोई और सम्बोध्न देना उचित व तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। सामान्यतः संगीत सुर, ताल और पद ;गायन के संदर्भ मेंद्ध के माध्यम से भावों के प्रकाशन का नाम है। जिस प्रकार पानी का अपना कोई रंग, खुशबु या स्वाद नहीं होता, परन्तु फिर भी वह मानव के लिए आवश्यक जीवन दायिनी शक्तियों में से एक है और अलग–अलग माध्यमों या पदार्थों के साथ मिलकर कई प्रकार के रंग, स्वाद व खुशबु प्रदान करता है। उसी प्रकार संगीत के सात स्वर भी पद, ताल आदि के साथ मिलकर नियमों में बंधने पर अलग–अलग प्रकार की शैलियों का निर्माण करते हैं। नियमों की कठोरता, जटिलता अथवा शिथिलता अथवा क्षेत्र विशेष के प्रभाव आदि बातों के परिणामस्वरूप शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम संगीत, लोकसंगीत आदि अनेक संगीत प्रकार और इन प्रकारों के अतंर्गत अन्य अनेक शैलियों ने जन्म लिया।

वर्तमान 'शास्त्रीय संगीत' राग पर आधरित संगीत है। 'शास्त्रीय–संगीत' के अंतर्गत राग का प्रस्तुतिकरण राग के नियमानुसार, राग के चलन एवं स्वरूप को ध्यान में रखते हुए ही किया जाता है। अतः हम कह सकते है कि वर्तमान 'शास्त्रीय–संगीत', 'राग–संगीत' का ही पर्याय है तथा यदि हम 'शास्त्रीय–संगीत' के स्थान पर 'राग–संगीत' शब्द का संबोधित व प्रयोग करें तो संभवतः अनुचित न होगा। क्योंकि आज हम शास्त्रीय–संगीत के नाम पर रागों का ही गायन–वादन करते हैं, रागों को ही सुनते सुनाते है तथा रागों को ही सीखते–सिखाते हैं।

वर्तमान समय में व्याप्त शास्त्रीय या राग संगीत को देखने सुनने के पश्चात् इस संगीत को देखने सुनने के पश्चात् इस संगीत को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है, वह संगीत जिसके अंतर्गत स्वर, ताल और पद (गायन के संदर्भ में) का प्रस्तुतीकरण एक विशेष रीति, शैली व परम्परा के अनुसार किया जाऐ, जिसमें तत्सम्बन्धी नियमों व स्वरलगाव, स्वरसमूहों आदि द्वारा प्रस्तुतीकरण हो उसे 'राग' या 'राग संगीत' या 'शास्त्रीय संगीत' कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शोध प्रबन्ध ;शास्त्रीय संगीत में अभ्यास का स्वरूप एवं महत्वद्ध, कमलजीत कौर, पृ0 6
2. संस्कृत हिन्दी कोष, वामन शिवराम आप्टे, पृ0 1015, 1058
3. संगीत बोध, डॉ शरच्चन्द्र श्रीध्र परांजपे, पृ0 3–5
4. लघु शोध प्रबन्ध ;वर्तमान काल में शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता के स्त्रोतद्ध, रविन्द्रकौर, पृ0 4
5. श्री मतंग मुनिकृत बृहद्देशी–देशी प्रकरण, अनुवादक डॉ0 बी0डी0 क्षीर सागर, पृ0 8,9
6. श्री मतंग मुनिकृत बृहद्देशी–देशी प्रकरण, अनुवादक डॉ0 बी0डी0 क्षीर सागर, पृ0 8,9